दैनिक जागरण
om/ events.jagran.com/jagranforum

पर्यावरण संतुलन के लिए पौधे लगाएं, हरियाली बढ़ाएं

■ बादलों के पार कार्बन की मोटी पर्त चिंताजनक

डॉ. सच्चिदानंद त्रिपाठी

देश के बड़े भू-भाग को एक किलोमीटर मोटी कार्बन एवं धूल मिश्रित कणों की पर्त ने अपनी गिरफ्त में ले लिया है, जो मौसम चक्र की चाल बदलने की आशंका बढ़ा रहा है। यूपी, बिहार में जयपुर की तुलना में कार्बन की पर्त अधिक मोटी है। आसमान में 500 मीटर से एक किलोमीटर मोटी कार्बन एवं धूल मिश्रित कणों की पर्त जमा है। पूर्व में यह बिहार से बंगाल तक फैली है। पश्चिम में जयपुर एवं दक्षिण में मध्यप्रदेश तक इसका क्षेत्र है। उत्तर भारत में कानपुर, बनारस तथा पंतनगर से नैनीताल तक यह फैली है। वातावरण में ढाई से पांच किलोमीटर ऊंचाई पर ऋतु के हिसाब से इसकी स्थिति बदलती रहती है। जून में जब गर्मी होती है तो यह पर्त और ऊपर चली जाती है। सर्दी में यह नीचे उतरती है, जहां इसकी मोटाई अधिक है, वहां के वातावरण को यह गर्म करती है । जब तापमान बढ़ जाता है तो बादल बनने की प्रक्रिया प्रभावित होती है, जिससे मानसून की संरचना प्रभावित होती है। केंद्र के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के कांटीनेंटल ट्रापिकल कनवर्जेंस जोन के कार्यक्रम में इसरो के सहयोग से आईआईटी कानपुर की टीम ने शोध किया। शोध के समय एयरक्राफ्ट का केबिन इतना गर्म हो जाता था कि उपकरण काम करना बंद कर देते थे। टीम के सदस्य उल्टी से पीड़ित रहते थे। बावजूद इसके न केवल शोध सफल रहा। अगले चरण के नतीजे अंतराष्ट्रीय जर्नल क्लाइमेट डायनामिक्स में प्रकाशन के लिए भेजे गये हैं।

– डॉ. सच्चिदानंद त्रिपाठी, मुख्य शोध कर्ता
एसोसिएट प्रोफेसर, आईआईटी।

इन पर जोर दें

वाहनों का प्रयोग घटा कर साइकिल और रिक्शा को बढ़ावा दें, सड़क के किनारे हरियाली बढ़ाने के लिए पौध रोपण पर जोर दें। कूड़े को खुले में न जलाये। खेतों में फसल का कूड़ा मत जलाये। जब इसका ख्याल रखेंगे तो कार्बन का उत्सर्जन घटेगा जो समाज के हित के लिए बहुत ज़रूरी है।

इधर दें ध्यान

प्रदेश सरकार ईंट के भट्ठा पर आधुनिक तकनीकी के इस्तेमाल पर जोर दे और ग्रामीण क्षेत्रों चूल्हे के स्थान पर स्टोव के प्रयोग को बढ़ावा दे तो कार्बन की मोटी पर्त को काफी हद तक कम किया जा सकता है।